
3 1761 06588673 1

वर तेजाजी

तर्ज गाज्यो गाज्यो



रचयिता :—

प्रतापरामजी महाराज, ब्यावर निवासी

प्रकाशक :—

लचन्द बुकसेलर, पुरानी मंडी

अजमेर (राजस्थान)

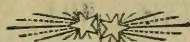
 [मूल्य ४० पैसे


UNIVERSITY OF TORONTO

कंवर तेजाजी

तर्ज- रेकार्ड

मंगलाचरण दोहा



सिवरूं गणपत सुरस्ती, सतगुरु श्री भगवान् ।
तेज कथा प्रारम्भ करूं, दो बुद्धी बल ज्ञान ।।१।।
नगर नागौर अद्भुत अति, पास खरनाल्या ग्राम ।
तेजाजी प्रगट भये, सेवा सालगराम ।।२।।
धन,धन,धन माता पिता, धन धन, कुटुम्ब परिवार,
धन खरिनाल्या ग्राम को जन्मे तेज कुंवार ।।१।।
भादव की एकादशी, शुभ दिन मंगलवार ।
शुक्ल पक्ष शुभ दिन घड़ी आये धोलिया द्वार ।।२।।
पूजा कीनी प्रेम से, बासक दियो वरदान ।
सम्वत् तेरहसो मध्य में जन्में तेज सुजान ।।५।।



तेजाजी महाराज की कथा प्रारम्भ

❀ गायन ❀

कीना कीना सोलह सिनगार माता सोनी हो
वासग की सेवा तो माता ढ़ाबली ।.टेर।।
उगो २ कासवजी रो भाण बीरा मारा वो
खुशियां तो छाई रङ्ग रावले ।।१।।
जनम्या २ तेज कंवार बीरा मारा वो
बधाई बांटी खरनाल्या ग्राम में ।।२।।
बीत्या २ दिन दो चार बीरा मारा वो
जलवा तो पूजी है माता प्रेम सूं ।।३।।
दिनो २ तेजल नांम वीरा मारा वों
पंडित ने दीनो हैं पक्को पेटियो ।।४।।
और बंधाई जरकस पाग बीरा मारा वो
पांच मोहरां तो दीनी गोकड़ी ।।५।।
गावे २ मंगला चार बीरा मारा वो
सखियां ता सरावे तेज कंवार ने ।।६।।
अद्‌भुत रूप अनूप बीरा मारा वो
सूरत तो चमके है झलहल भाण ज्यूं ।।७।।
कीना २ बगतोजी विचार बीरा मारा वो
तीरथ तो करबारी मन में धार ली ।।८।।
प्रतापराम गुरू पाया बीरा मारा वो
धन्नाराम तेजाजी ने वीणवे ।।९।।

❀ दोहा *

पति पत्नी मिल चालिया संग में तेज कंवार ।
भाई भतीजा साथ में न्हाया हरि द्वार ।
बगताजी री नारी गङ्गा घाट पर न्हाया वो
पंडित जिमाया जिन प्रेम सूं ।।१।।
राइमलजीरी नारी गङ्गा घाट पर मिलिया वो
संग में तो पेमल वांरे डावडी ।।२।।
दान पुण्य तो दियो मोकलो साधु नित जिमाया वो ।
दो दो तो म्होरां दीनी है रोकडी ।।३।।
पनेर ग्रामरा राइमल मृथा बगताजी ने मिलिया वो ।
बगतो जी जाट कहीजे धोलिया ।।४।।
हिलमिल सारा तीरथ कीना पाछा पुष्कर आया वो ।
प्रेम बांदण री मन में भावना ।।५।।
प्रतापराम गुरू पूरा मिलिया धनाराम गुण गाया वो ।
भगतां री आशा तो पूरे रामजी ।।६।।

वीर तेजाजी का विवाह

तेजाजी री करी सगाई झटपट ब्याव रचाया वो ।
थाली में परणाई पेमल डावड़ी ।।१।।
सात मास की कन्या पेमल नो मास का तेजा वो ।
सखियां तो गावे है मिल सोलवा ।।२।।

बगतोजी तो आया खरनाल्या घर २ बांटी बधाई वो ।
गात तो जगाई धावंलिये डांगड़ी ।।३।।
गांव पनेर राइमलजी पुगा भाई हुया सब भेला वो ।
पेमल ने परणाई खरनाल्या ग्राम में ।।४।।
राइमलजी रो काको बोल्यो ओ कांई अनरथ कीनो वो ।
वैर तो मांगा धावलिया में आगलो ।।५।।
राइमल जी के शंका पड़गी काके वचन सुणाया वो ।
घर में तो समझाई अपनी नार ने ।६।।
प्रतापराम गुरु पूरा मिलिया सिवरण सत समझाया वो ।
धनो राम जस गावे तेज कंवार का ।।७।।

❋ सोरठा ❋

तेजा थारो तेज छिपे ना तीनों लोक में
सूरज किरण समान चेरो खिले गुलाब ज्यूं ।
बरस अठारा मांय आय बीरा मारा वो ।
हलियो तो लीनो तेजल हाथ में ।।१।।
बावे बावे खेत तेजाजी बीरा मारा वो ।
अजब अनोखा ज्यारे बैलिया ।।२।।
लावे लावे वेहनड़ बीज बीरा मीरा वो ।
भातो तो लावे भावज प्रेम सूं ।।३।।
गहरी गहरी लागी भूक भावज म्हारी वो !
मोडो तो कियो है किण कारणे ।।४।।

आई आई घरां सु वेग देवर म्हारा वो ।
रोतो तो छोडयो पींगे डावड़ो ॥५॥
इती इती बात कांई केवो देवर म्हारा वो ।
परणी तो बैठी है पीयर मांयने ॥६॥
लागो लागो कालजिया में तीर भावज म्हारी वो ।
दिन री उगाली जाऊं सासरे ॥७॥
प्रतापराम गुरू पूरा मिलिया सत्य सार बताई वो ।
धन्नो कहे तेजाजी जावे सासरे ॥८॥

* दोहा ❀

पंडित पतड़ों देखियो मोहरत मिलियो नांय ।
राहु शनी के बीच में पंडित कह समझाय ॥

झूठी झूठी बात करे कांई पण्डित भोला वो ।
दीन री उगाली जाऊं सासरे ॥९॥
कीनी कीनी लीलड़ ऊपर जीण बीरा मारा वो ।
चढ़तां तो छींको है सामो छोकरी ॥१०॥
आई आई खाली पनीहार बीरा मारा वो ।
सामा तो पलाऊं तीतर बोलिया ॥११॥
घटा चढ़ी है घनघोर बीरा मारा वो ।
धराऊं दिसा में दमके दामणी ॥१२॥
बरसे-बरसे मूसळधार वीरा म्हारा वो ।
नदियां तो खळको मारग मांयने ॥१३॥

पूगा २ गांव पनेर बीरा म्हारा वो
बाकी तो तड़को रेगियो पोर को ॥१४॥

❀ दोहा ❀

रैण गई दिन ऊगियो, पानी भरे पनिहार ।
लीलण हरीयो चर रही, ऊभो तेज कुंवार ॥

सरवरियारी पाल ऊपर कंवर तेजो उबो ओ ।
पूछे पनियारियां किण गांव रा ॥१५॥
जात धाबलिया नाम है तेजो खरनाल्या वासीओ ।
रायमलजी भूते रे घर पावणा ॥१६॥
तेजाजीरी सगी साली चम्पाबाई बोल्या ओ ।
हालो जीजाजी घर आपणे ।
जाओ सालीजी थोड़ी देर मांने लागे ओ ।
तोर सरवरियारी म्हे तो सांपड़ां ॥१७॥
घरे जाय बाईजी पूगा सुनलो माता मारी ओ ।
तेजांजी बहनोई आया पावणा ॥१८॥
उठ पेवल बड़का सूं बोली सुनले चम्पाबाई ओ ।
मासा क्यों बोले सगी बहन ने ॥१९॥
लालण होज पोल में कोनी घर तेजोजी आयाओ ।
सासू कह भड़काया गहरा बांछड़ा ॥२०॥
गूजला खार प्रेम से रांधो राग अनेक बनाया ओ।
देशा गेहूं रा पतला फांकरा ॥२१॥
साला बहनोई जीमणने बैठा रुच २ भोग लगावेओ ।

मनड़ा री बातां कीन्हीं प्रेम सूं ॥२१॥
घर २ मांई बंटी बधाई मन में प्रेम सवाया ओ ।
सखियां तो गावे कंवर ने सौलवां ॥२२॥
शाम पड़ी दीपक मन्जीयो हींगलू खाट ढलाई ओ।
ऊंची तो मेंड़ी में कुंवर पोढियो ।
लागी आंख लाछो कुरलाई दोड़ गुजरी आईओ ।
गायां तो ले जावे, म्हारी धार सूं ॥२३॥
शस्त्र बांध कंवरजी सजिया लीलण की असवारी ओ ।
बार तो चढ़िया बनी बीच में ॥२४॥
लाय जो लागी जलता नाग बचाया ओ ।
अनरथ कांई कीनो सांवत सूरमा ॥२५॥

❀ दोहा ❀

बामग मुख से बोलिया क्यों बचायो तेज ।
अग्नि लागी अंग में नहीं दर्शन में जेज ॥
दीना २ वचन तेजल वीर नाग राजा ओ ।
सूरज की साखी तो बंबी आव सूं ॥२६॥
आडी ढ्योड़ी ऊंची डूंगरियां भोम करारी ओ ।
भाग्या जावे रे मीणा चोरटा ॥२७॥
आडो मारग आय कंवर जी सम्मुख लडी लडाई ओ ।
केई तो चोरां ने उठे मारिया ॥२८॥
गायां छोड़र चोर भाग्या तेजल पाछा आयाओ ।
मारी सम्भालो गायां गूजरी ॥२९॥

एक वेलियो लारे छोडयो गायां अधूरी लायाओ ।
गायां में परमुख काणों टोगडो ।३०।
पाछा गया तेजाजी जंगल से काणों ल्याया वो ।
मीणा तो मारया पूरा एक सौ ॥३१॥
लाछो गुजरी राजी हो गई भला गांव में आयाओ ।
जीजाजी पधारिया कृपा राम री ॥
पाछा मुड़िया गया बम्बी पर जागो बासग कालाओ ।
वचना रो बन्धियों तेजो आवियो ॥३२॥
भवके जागी पदम नागणी सूरा कींकर आयाओ ।
काला रो खायोड़ो कोई नहीं जीवे ॥३३॥
कहे कंवर सुनलो माताजी सूता नाग जगाओओ ।
म्हारी तो प्रतीज्ञा राखी राम जी ॥३४॥
कहे नागणी सुनों नागजी कांई थे नींद गुमाओओ ।
बम्बी पर आयो बेटो जाट को ॥३५॥
मरोड़ कर मिणधारी उठिया सुन ये नागण प्यारीओ ।
बचना रो बांधियो तेजो आवियो ॥३६।
लोई जान केसरिया जामा विगन कई नहीं जावेओ ।
तीरां रो बिंदियोड़ो सारो अंग है ॥३७॥
वासग कहे सुनोओ तेजा पाछा घरां ने जावोओ ।
आदर तो कीन्हों तेजा आय ने ॥३८॥
बचन पाल बम्बी पर आयो अब मत देर लगाओ ओ ।

जीभ कंवारी मूंडे मांयने ॥३९॥
मासु सराप दसो तेजा ने बालक डंक लगायोओ ।
धरती पर पड़ियो धमके से आयके ॥४०॥
रेबारी मारग में मिलियो आजो बीरा म्हाराओ ।
पेमल ने दीज्ये मारो मोलियो ॥४१॥
ले मोल्यो चाल्यो देवासी गांव पनेर में आयोओ ।
पेमल तो ऊभी उड़ावे कागला ॥४२॥
कहे देवासी सुनबाई पेमल नीचा वेग पधारोओ ।
थांवर तो कोपिया दीनानाथ जीं ॥४३॥
मोल्यो देख पड़ी बाई पेमल कुरजां ज्यूं कुरलावेओ ।
निगह तो हो गई है सारा गांव में ॥४४॥
कहे देवसी सुनबाई पेमल तेजल स्वर्ग सिधारयोओ ।
विकट बनी में बम्बी नाग री ॥४५॥
नीलो नारियल लियो सती पेमल सोलह शृङ्गार सजायाओ ।
सत्ती तो होवारी मन में धारली ॥४६॥
बरजे बाप और भाई भोजाई बरजे बांरी जग्नीओ ।
माला तो फेरेनी सालग रामरी ॥४७॥
सज सोला शृंगार सती तो आयी बम्बी ऊपर ओ ।
आतो कांई कीन्हीं म्हाने रामजीं ॥४८॥
पेमल कहे सुनो म्हारी लोलण सांची मनरी बातांओ ।
सन्देशो कर दीज्यो खरनालिये गांव में ।४९॥

चन्दन की लकड़ी कर भेली सब मिल चिता बनाईओ ।
सती पति ने लोटा गोंद में । ५०॥
हाथ जोड़ ने करे वीनती सुनजो म्हारा भाई ओ ।
जागण तो दीज्यो नम रातरी ॥५१॥
मास भादवो १० देवली पूजे नर व नारी ओ ।
पर्चा तो पावे भाईयों प्रेम सू ॥५२॥
प्रत्यक्ष पर्चो देख तेज को काला रो जहर उतारेओ ।
कर्मोंरा लिखियोड़ा भाईयों ना टले ॥५३॥
कासव सुत ने करे वीनती राखो लाज हमारी ओ ।
ज्वाला तो प्रकटी चारों ओर से ॥५४॥
खेताराम सामर्थ गुरु मिलिया सांचा भेद बतायाओ ।
दास प्रताप वीरों ने वीनवे ॥५५॥

❀ दोहा ❀

सुण बटाउ के वचन को पेमल हुई वेहाल ।
ऊपर से नीचे पड़ीं धरती पर तत्काल ॥१॥
खरनाल्ये नीलड़ गई सुणले भावज वैण ।
तेजल मारले सुरग में पाणी ढलके नेण ॥२॥
भाभी सुणियो वचन हिवड़े उठी झाल ।
आ मालिक कांई करी हेलो सुनो प्रतिपाल ॥३॥
जननी विलखे पुत्र को मासु दियो मराय ।
सगी बहन सत्ती हुई जुरे पुत्र को बाप ॥४॥

❀ टुकड़ी राग लावणी ❀

ओ तुम सुन लेना नर नार हकीकत सारी ।
तेजाजी धवलिया जाट वीर तप धारी ।।टेर।।

भावज ने बोला बोल जोश में आया ।
घोड़ी पर कीन्ही जीण सासरे धाया ।
मेंह बरसे मुसलधार रात अंधियारी ।।१।।

लिखा विधि विधान कहा नहीं जावे ।
सासू दियो सराप निमित कहलावे ।
वो पेमल का भरतार महान बलकारी ।।२।।

पोढिया महल के मांही गूजरी आई ।
म्हारी गायां ले गया चोर घणी कुरलाई ।
चढ़िया कंवर जब बाहर छोड़कर प्यारी ।।३।।

विकट बनी में लाय अचानक लागी ।
जलतो देखियो सांप तेज बड़ भागी ।
लीना प्राण उबार कोप्यो मिणधारी ।।४।।

कहे वचन यों नाग कंवर सुण तेजा ।
मेरा बचाया प्राण काम किया बेजा ।
सुण सांवत सरदार मौत आई थारी ।।५।।

सुण वचन नाग का तेज कंवर यों बोला ।
तेरा बचाया प्राण होनी सो होला ।
जाऊं गायां की लार कहे प्रण धारी ।।६।।

लीना बचन है नाग वरदान फरमाया ।
होगी थारी जीत कहर जब धाया ।
बाजे रण तलवार चले ओ कटारी ।७।
केई मीणां को मार गायां ले आया ।
लाछां गूजरी ओला एक सुनाया ।
छोड्यो केरड़ो लार हार हुई थारी ।।८।।
सुन लाछां का बचन जोश में आया ।
सो सो मीणां ने मार केरड़ो लाया ।
छलनी हुयो शरीर हिम्मत नहीं हारी ।।९।।
बचनों का बंधिया तेज बंबी पर आया ।
नाग दियो वरदान जीभ के खाया ।
देश देश में पूजा होवेली थारी ।।१०।।
राजस्थान में ब्यावर शहर है पाया ।
और तेजाजी का चौक मेरे मन भाया ।
दसम ग्यारस धोक देवे नर नारी ।।११।।
मिले पर्चा तत्काल यात्री आवे ।
तुल तुल कर देवे ढ़ोक नारेल चढ़ावे ।
बड़ा कम्पनी बाग खिली गुल क्यारी ।।१२।।
संतो की महिमा श्रद्धा करके गावे ।
अन धन बढे आनन्द जो पर्चा पावे ।
कर जोड़ कहे प्रताप जाऊं बलिहारी ।।१३।।

सरला प्रिन्टिंग प्रेस, महता मार्केट, अजमेर

आवरण मुद्रक—अजमेर आर्ट प्रिण्टर्स, अजमेर ।

लेखक प्रतापराम. — अजमेर : फूलचन्द बुक-

ejaji, folk deity of Rajasthan.

